

प्लॉसमेंट खबर 2009-10

हर रात की सुबह होती है— कुछ ऐसी ही आशा निए फाईनल ईयर के लात्र दिसंबर का इंतजार कर रहे थे। और सुबह आयी, सूरज गर्म था और चारों ओर उम्मीद की किरणें फैला गया। पिछली बार HUL, Credit Suisse, RIL, Finance, FMCG कैम्पस भर्ती करने नहीं आये थे। पर इस बार इन कम्पनियों को देख जान में जान आयी। पहले ही हफ्ते में आयी Microsoft, Yahoo, ITC, IBM, JP Morgan, DB, Futures First, FICO, GE अच्छे कैम्पस प्लॉसमेंट की आशा जगा रहे थे।

Day 1	IIT Bombay	IIT Kharagpur	IIT Madras
2009-2010	76	36	30
2008-2009	70	20	13
2007-2008	120	75	-

पहले दिन 36 को नौकरी का न्यौता मिला और 11 छात्रों को प्रतीक्षा सूची में रखा गया। Deutsche Bank ने 10 को लिया तो ITC ने 9 छात्रों को और नोमुरा ने 12 को। यही सिलसिला चलता रहा और 12 दिन के अंत तक करीब 338 लात्र-छात्रों को 55 कम्पनियों द्वारा न्यौता मिल चुका था। अब तक कुल 1341 छात्रों से 540 लात्र का पहले दौर में चयन हुआ है। पिछले वर्ष से तुलना करें तो यहाँ इस वर्ष पहले चरण में लगभग 540 लात्र नौकरी पा चुके थे वहीं पिछले वर्ष सिर्फ 460 लात्र ही सफल हुए परंतु उसके पहले के वर्ष 2008-2009 में 600 से अधिक प्लॉस हुए थे। इस तिवाज से कहा जा सकता है कि प्लॉसमेंट की हालत मंदी के दौर से थोड़ी बेहतर हुई है। इसी प्रकार इस साल प्रथम दिन यहाँ 36 को नौकरी मिली वहीं पिछले वर्ष 20 और पिछले के पिछले वर्ष 75 को पहले ही दिन सफलता प्राप्त हुई थी। 75 के जादुई अंक में Schlumberger ने पहले ही दिन 38 को भर्ती किया था।

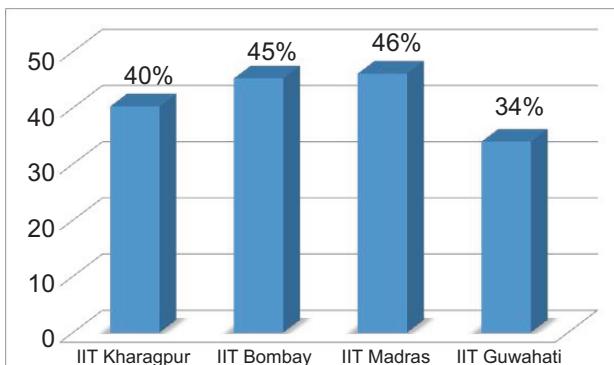
अगर दूसरी आई.आई.टी से तुलना करें तो आई.आई.टी पवर्ड में करीब 86 छात्रों को पहले ही दिन नौकरी का न्यौता मिला। आई.आई.टी पवर्ड में पहले दिन 21 कम्पनियों ने भाग लिया जिनमें से Morgan Stanley, McKinsey, BCG, Shell Technology, Sony and Deutsche Bank प्रमुख रहे। यहाँ कम्पनियों ने दो स्टॉल्ट्स में छात्रों का चयन किया जिसकी प्रक्रियाएँ रात के दो बजे तक चली। 2 स्टॉल्ट्स होने से यह फायदा है कि जो कम्पनीयाँ यहाँ पर दूसरे दिन आयीं वहीं आई.आई.टी पवर्ड में पहले ही दिन आ चुकीं थीं। खबर मिलने तक आई.आई.टी पवर्ड के 1158 में से 524 लात्र नौकरी पा चुके थे। वहीं आई.आई.टी मद्रास के 1090 छात्रों में से करीब 501 को चयनित कर लिये गये हैं। यहाँ Tower Research ने 24 लाख का सर्वाधिक पैकेज दिया जिसके साथ सुनिश्चित बोनस मिलाने पर करीब 44 लाख का पैकेज बनता है। वहीं आई.आई.टी कानपुर में भी

पहले ही दिन 9 छात्रों को 22 लाख का पैकेज दिया गया। इस वर्ष आई.आई.टी कानपुर में पिछले वर्ष असफल रहे 200 छात्रों को भी प्लॉसमेंट के लिए आमंत्रित किया था। आई.आई.टी लड़की में IBM द्वारा 14 लाख के सर्वोच्च पैकेज का प्रस्ताव दिया गया है। आई.आई.टी खड़गपुर में 22 लाख का अधिकातम पैकेज Barclays ने दिया।

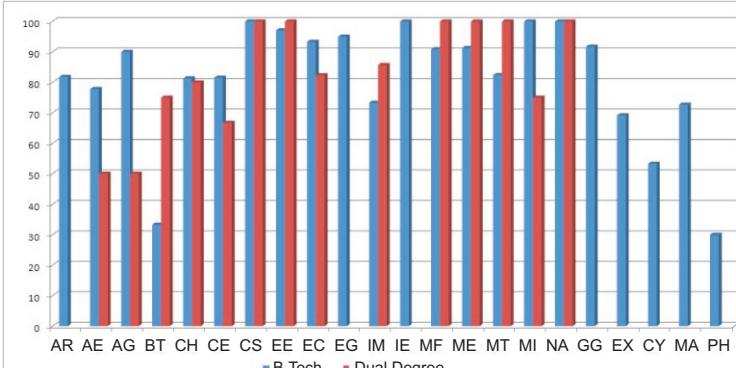
देखा गया है कि कुछ कंपनियों का रुझान कुछ निश्चित आई.आई.टी की तरफ थोड़ा ज्यादा होता है। उदाहरण के लिये Tower Research आई.आई.टी पवर्ड, आई.आई.टी कानपुर, आई.आई.टी मद्रास से काफी छात्रों को भर्ती करती है परंतु आई.आई.टी खड़गपुर का रुख शायद ही कभी किया। इसी प्रकार ZS, Schlumberger आदि का झुकाव आई.आई.टी खड़गपुर की ओर रहा है। इसका कारण कंपनियों के भीतर का अलुमनाई नेटवर्क माना जाता है।

मत्ते ही शुरूआत में प्लॉसमेंट की स्थिति संतोषजनक रही पर आखरी कुछ दिनों में हालत दोबारा पिछले वर्ष को दोहराने लगी। आई.आई.टी मद्रास में प्लॉसमेंट की शुरूआत तो बढ़िया रही पर आखिरी दिनों में दौर बिगड़ा और केवल 46% प्लॉस हुए जो की पिछले वर्ष के बराबर ही रहा। आई.आई.टी खड़गपुर में भी 540 का आकड़ा पिछले वर्ष से बड़ा तो है पर उसके पहले के साल 2007-08 के 600 से अधिक नहीं। हमेशा कि तरह कुछ विभागों के प्लॉसमेंट उम्दा रहे तो वहीं दूसरे विभागों का खाता भी खुलने से रहा। ऐसे में कोल इंडिया एवं NTPC जिन्होंने कैम्पस से कमशाः 46 एवं 19 छात्रों को ले गयी उन्होंने खनन व यांत्रीकी विभाग के छात्रों में लगभग सभी को नौकरी दी जिससे इस वर्ष के प्लॉसमेंट में काफी उताल आया।

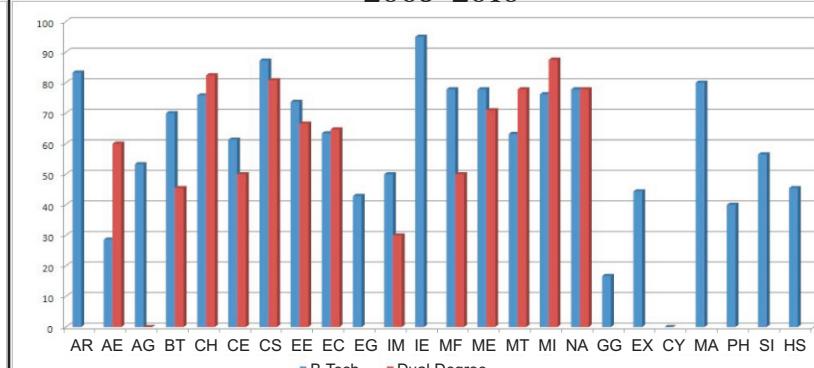
इस बार PlaceCom ने हर डिपार्टमेंट से कुछ प्रतिनिधि चुनकर एक सकारात्मक कदम उठाया था जिनका काम डिपार्टमेंट से जुड़ी कम्पनियों की सूची तैयार करना था। इन प्रतिनिधियों से अपेक्षित था कि वे दिसंबर में रुककर मदद करें लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। इसके अलावा PlaceCom के गठन के पूर्व PSU's ही अधिकांश में छात्रों को ले जाती थी जबकि अब Finance, Consultancies, IT, Core, FMCG आदि क्षेत्रों की कंपनियाँ बहुतायत में आती हैं।



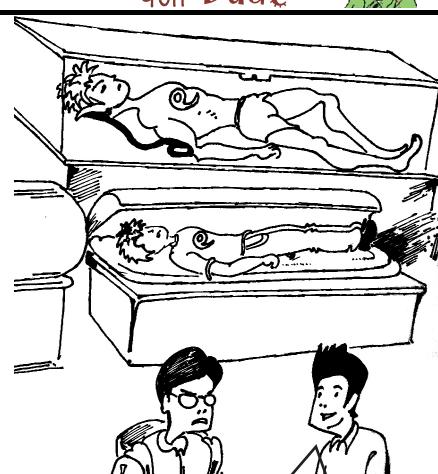
2008-2009



2009-2010



पंजी Dude



बंदे ने पीस मारने का धांसु प्लान बनाया है। अब ये तो सोएगा और इसका मरग 'अवतार' इमित्हान देगा।

इन्टर आईआईटी में खड़गपुर का शर्मनाक प्रदर्शन

गत माह 45वीं इन्टर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट आईआईटी कानपुर में 11 से 18 दिसम्बर तक आयोजित हुई। जिसमें कुल 15 आईआईटी की टीमें कुल 12 खेलों में एक दूसरे से मिलीं। इन खेलों में एथेलेटिक्स, बैडमिंटन, बार्केटबॉल, क्रिकेट, शतरंज, फुटबॉल, हॉकी, रक्षणा, टेनिस, टेबलटेनिस, वॉलीबॉल और वेटलिफिटिंग शामिल हैं। गैरततलब है कि इन्टर आईआईटी टैराकी अक्टूबर माह में सम्पन्न हो चुकी है। इस बार इन्टर आईआईटी में खड़गपुर का प्रदर्शन काफी खराब रहा। पुरुष टीम ने कुल 18.25 अंक प्राप्त किए और महिला टीम तो केवल 6 अंक ही बना सकी। पुरुष वर्ग में इस बार मुम्बई का प्रदर्शन काफी उम्दा रहा। मुम्बई टीम ने बैडमिंटन, बार्केटबॉल, फुटबॉल, हॉकी और वेटलिफिटिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दिल्ली की टीम क्रिकेट और टेनिस में अव्वल रही और चैन्नई ने टेबलटेनिस और वॉलीबॉल में बाजी मारी। खड़गपुर की टीम टेबलटेनिस में दूसरे, टैराकी, फुटबॉल और वेटलिफिटिंग में तीसरे स्थान पर रही। एथेलेटिक्स के पुरुष और महिला दोनों वर्गों में रूढ़ी की ने बाजी मारी।

इसी प्रकार महिला वर्ग में चैन्नई ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने टेनिस, बार्केटबॉल और टेबलटेनिस में बादशाहत कायम की। खड़गपुर की टीम केवल टैराकी में दूसरे स्थान पर रही। बैडमिंटन में कानपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस बारे में जब आवाज़ ने जिमखाना के

g.sec.(sports) अंकित जोशी से बात की तो उन्होंने ये रवीकार किया कि इस बार हमारा प्रदर्शन आशा से काफी नीचे रहा। उन्होंने कहा कि इस बार प्लेसमेन्ट्स की तजह से काफी फाइनल ईयर छात्र भाग नहीं ले पाए। कई खिलाड़ियों ने अभ्यास मैचों में भी हिल्टा नहीं लिया। उन्होंने ये भी माना कि हमारे यहां संसाधनों की कमी है। जैसे कि हमारे यहां टेनिस के लिए सिंथेटिक कोर्ट और क्रिकेट के लिए प्लॉड लाइट्स की कमी है। हालांकि उन्होंने ये विश्वास भी दिलाया कि इस स्थिति में जल्द ही सुधार होगा। कुछ नए कोच लाए जाने पर भी विचार चल रहा है जो केवल इन्टर आईआईटी के अभ्यास पर ही ध्यान देंगे।

गैरततलब है कि दो साल बाद हमारे आईआईटी में इन्टर आईआईटी का आयोजन होना है। किन्तु इस आयोजन की मेजबानी को लेकर कैम्पस में तैयारी न के बदल रही है। टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में दर्शकों के बैठने की कोई व्यवस्था नहीं है। ग्राउंड की हालत भी बदहाल है। ज्ञान घोष रेडियो भी जीर्णोद्धार के लिए तरस रहा है। इस बारे में अंकित ने कहा कि 2011 में होने वाले इन्टर आईआईटी

की तैयारियों के लिए हमारे पास काफी समय है। उस वक्त तक नए जिमखाना का निर्माण हो जाएगा। नए जिमखाना में इंडोर बार्केटबॉल कोर्ट, 4 बैडमिंटन कोर्ट और 2 टेबलटेनिस कोर्ट शामिल हैं। इसके अलावा भी काफी प्रस्ताव हैं जो जल्द मूर्त रूप लेंगे। हम आशा करते हैं कि आईआईटी खड़गपुर की जनता को ये बदलाव जल्द दिखाई देंगे।

पुरुष वर्ग विजेता

1 आईआईटी मुम्बई	79.83
2 आईआईटी दिल्ली	51.00
3 आईआईटी कानपुर	49.83

महिला वर्ग विजेता

1 आईआईटी चैन्नई	34
2 आईआईटी कानपुर	26
3 आईआईटी रूड़ी	24

स्प्रिंग फैस्ट और क्षितिज़

पूर्वी भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक उत्सव Spring Fest आईआईटी खड़गपुर में 21 से 24 जनवरी तक आयोजित किया गया। जितने जोर-शोर से इस

साल Spring Fest का प्रचार किया गया, उतने ही जोर-शोर से KGP की जनता ने की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। इस साल Spring Fest के 2 दिनों नाईट्स में अंतिम समय में किए गए बदलावों से जनता को काफी निराशा हुई। यह एक प्रकार से संचालन समीति की तैयारियों की तरफ उंगली उठाता है। एक और जहाँ लगभग सारे कार्यक्रम हर साल की तरह देरी से शुरू हुए, वहीं दूसरी ओर Skid Row और जल बैंड के न आने के कारण भी काफी हल्ला मचा। ऐसी अफवाहें भी उड़ी कि आयोजन समीति ने Skid Row को संपर्क ही नहीं किया था किंतु Skid Row की ऑफिसियल वेबसाइट पर उनके यहाँ आने की खबर दी हुई थी जिमखाना के G.Sec. (Social and Cultural) करिश्मा देसाई से बात करने पर उन्होंने बताया कि Lead गिटारिस्ट “डेविड रनेक सैबा” की अचानक तबीयत खराब हो जाने के कारण SF के दौरान Skid Row बैंड नहीं आ पाया तथा वीजा नहीं बढ़ पाने के कारण “जल” बैंड नहीं आ पाया। Skid Row और जल बैंड के न आने की भरपाई कैलाश खेत और प्रीतम ने आकर पूरी की। इस बार हाल्य कवि सम्मेलन भी कैलाकारों की फ्लाइट लेट होने के कारण लगभग तीन घंटे की देरी से शुरू हुआ तथा कुमार विश्वास को मंच पर पुनः देखकर पुराने छात्रों को थोड़ी निराशा हुई।

इन सब बातों को छोड़ कर शेष कार्यक्रम मनोरंजक थे एवं साही तरीके से संपन्न हुए। किंतु प्रतियोगियों की कमी की वजह से ‘जुगलबदी’ को रद्द करना पड़ा। Spring Fest में इस साल कई नए ईवेंट्स जोड़े गए थे। इसके बाहर प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए ‘पीस फर युथ वर्कशॉप’ तथा ‘द लॉस्ट वर्ल्ड’ नामक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गयी। MTV का एक कार्यक्रम ‘स्टंट मैनिया’ भी इस फैस्ट में आयोजित किया गया जिसे जनता ने काफी पसंद किया। इस साल Spring Fest से सारेगामा म्यूजिक, इथोस इंडिया, बार कॉन्सिल और इंडिया,



इस सेमेस्टर रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया में एक बड़ा बदलाव तब हुआ जब पुरानी रजिस्ट्रेशन साइट के बदले ई

.आर.पी. का प्रयोग शुरू हुआ। हालांकि उम्मीद ये की गई कि इस परिवर्तन से पिछली कई समस्याओं से मुक्ति मिलेगी किन्तु इस नए प्रयोग से कई अन्य समस्याएँ बढ़ती हुई प्रतीत हुई। ग्रेड की जानकारी के संदर्भ में जहाँ यह प्रयास सफल रहा वहीं छात्र-छात्राओं को साइट की कई खामियों की वजह से भागदौड़ करनी पड़ी। कई विषयों के ग्रेड कई बार परिवर्तित हुये। कभी अपना अकाउंट न खोल पाने से निराशा हुई तो कभी अनायास ही किसी अन्य छात्र का अकाउंट खुल जाने से परेशानी हुई। कुछ लोगों का कहना था कि अँनलाइन रजिस्ट्रेशन बेहद जल्दी बंद कर दिया गया और शनिवार और रविवार को साइट के न चलने से परेशानी और बढ़ गई। अँनलाइन रजिस्टर करने के बावजूद कुछ छात्रों का नाम रजिस्टर नहीं हो पाया और उसके लिए उन्हें कभी अपने फेकलटी एडवाइजर तो कभी इंस्ट्रियल इंजीनियरिंग विभाग के चक्रकर काटने पड़े। साथ ही ब्रेडथ के निर्धारण या परिवर्तन में भी छात्रों को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

ई.आर.पी. सिस्टम का निर्माण संस्थान में ही हुआ है तथा इसे विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसमें संलग्न के विभिन्न विभागों को एक साथ संगठित करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि संलग्न द्वारा रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को सरल होने की बजाय कठिन ही बनी रहेगी।

किंतु अभी ई.आर.पी. का प्रारंभिक दौर होने के कारण ये समस्याएँ होना कुछ हद तक स्वाभाविक भी है। और संस्थान के एडमिनिस्ट्रेटिव कंप्यूटर सेंटर के प्रमुख प्रो. आर.एन.वैनर्जी के अनुसार ई.आर.पी. के पूर्णतया सफलतापूर्वक शुरू हो जाने पर छात्रों को कई सुविधाएँ प्राप्त होंगी जैसे एकल्ट्रो क्लास होने या छात्र की उपस्थिति कम होने पर प्रोफेसर छात्रों को आईमेल द्वारा सूचित कर सकेंगे। प्रो.वैनर्जी के अनुसार स्प्रिंग सेमेस्टर के अंत तक ई.आर.पी. सुचारू रूप से कार्य करने लगेगी। आशा है कि तकनीकी खामियों को दूर करके यह प्रयास संस्थान की प्रक्रियाओं को सरल बनाएगा।

ई.आर.पी. पे रजिस्ट्रेशन

ई.आर.पी. सिस्टम का निर्माण संस्थान में ही हुआ है

तथा इसे विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इसमें संलग्न के विभिन्न विभागों को एक साथ संगठित करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि संलग्न द्वारा रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को सरल होने की बजाय कठिन ही बनी रहेगी।

किंतु अभी ई.आर.पी. का प्रारंभिक दौर होने के कारण ये समस्याएँ होना कुछ हद तक स्वाभाविक भी है। और संस्थान के एडमिनिस्ट्रेटिव कंप्यूटर सेंटर के प्रमुख प्रो. आर.एन.वैनर्जी के अनुसार ई.आर.पी. के पूर्णतया सफलतापूर्वक शुरू हो जाने पर छात्रों को कई सुविधाएँ प्राप्त होंगी जैसे एकल्ट्रो क्लास होने या छात्र की उपस्थिति कम होने पर प्रोफेसर छात्रों को आईमेल द्वारा सूचित कर सकेंगे। प्रो.वैनर्जी के अनुसार स्प्रिंग सेमेस्टर के अंत तक ई.आर.पी. सुचारू रूप से कार्य करने लगेगी। आशा है कि तकनीकी खामियों को दूर करके यह प्रयास संस्थान की प्रक्रियाओं को सरल बनाएगा।



बिल्ली के गले में ऑनलाईन घंटी...

जमाना था कि चूहों ने फैसला किया कि बिल्ली के गले में घंटी बांधनी है। तब सोचा जाने लगा कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? वक्त बदला और बिल्ली कैट हो गयी और चूहे परीक्षार्थी। गनीमत है कि अब चंद खुशनसीब तीसमारख्य चूहे कैट के गले में घंटी बांधने में सफल हो ही जाते हैं। कैट के हुक्मरानों को सदियों की मेहनत से हासिल की गयी चूहों की ये खुशी देखी नहीं गयी। अब फैसला हुआ कि चूहों को औकात दिखायी जाये। फरमान आया कि बिल्ली के गले में अब सीधे घंटी नहीं बांध सकते। अगर बांधनी है तो ऑनलाईन घंटी बांधो वरना कैट को भूल जाओ। अब बड़ी शामत आई। कुछ देहाती चूहों ने तो पहले ही उम्मीद छोड़ दी बाकी बाबा रणछोड़दास के चेले दिल को झूठी तसल्ली देने के लिये 'आल इज वेल' गाते रहे। मगर शुतुरमर्ग के गर्दन लुपाने से मुसीबत कहाँ टलती है? जो होना था वही हुआ। कैट ने दिखा दिया कि बिल्ली, बिल्ली होती है और चूहे, चूहे। समय बदल गया हो पर समीकरण नहीं बदले। चूहों का भविष्य और उनकी मेहनत बिल्लियों के लिये कम ही मायने रखती है। बिल्ली के गले में घंटी चूहों के लिये जीवन-मरण का प्रश्न



हो सकती है मगर बिल्ली के लिये बस घंटी है।

खैर जाने दिये गया जाने ही दिया होगा। मगर साहब! जब परीक्षा हॉल के बाहर जो चेकिंग हुई उसने ऐसे ही जाने नहीं दिया। जैसे रुमाल तक निकाल ली जो आमतौर पर कैट जैसी परीक्षाओं में आमतौर पर

लीटर के हिसाब से आने वाले पर्सीने को पांछने में सबसे उपयोगी वस्तु हुआ करती है। ऐसा लगता था कि पाकिस्तान का बार्डर पार करने जा रहे हैं। अंदर पहुँचने पर एक साहब ने लंबा भाषण दिया जिससे पता नहीं चल पाया कि वो भारत की तकनीकि प्रगति की बात कर रहे हैं या एक सीधी सादी परीक्षा की। हाँ कुछ देर में नेट की स्पीड ने भारत की तकनीकि प्रगति की पोल तो खोल ही दी। अब भला बिजली रानी कर्यों पीछे रहती? उन्होंने भी भविष्य में इडेन गार्डन पर आने वाले संकट की पूर्व सूचना दे दी।

खैर हम फिर भी कहेंगे कि 'आल इज वेल'। अगले साल उम्मीद है कैट ऑनलाईन नहीं होगा। तब तक अगर आप भी भुक्तभोगी साबित होते हैं तो आर्गनाइजिंग कमिटी की माफी से काम चला लिजीये।

रजिस्ट्रेशन का प्रक्रिया

कॉलेज में अपना पहला सोमेस्टर खन्न करने के बाद हमें पता चला कि हमें अगले सेम के लिए फिर रजिस्ट्रेशन करवाना पड़ेगा। 'यह क्या तुक हुआ' बड़बड़ते हुए हम बैंक पहुँचे तो पता चला कि हमारा भाग्य हमें हमेशा की तरह धोखा दे गया है, और मुर्हरम के चलते आज बैंक बंद है। हम रोते हुए घर को लौट आए, और मन को दिलासा दिया कि यह इंटरनेट का युग है, ऐन केन प्रकारेण पीस जमा हो ही जाएगी। 29 की रात को खड़गपुर पहुँच रहे हैं, कुछ न कुछ इंतजाम कर ही ले लेंगे।

पर हम भी ना जाने किस नक्षत्र में पैदा हुए थे, कि हमारी किस्मत इतनी फूटी हुई है। हम जैसे आम आदमियों का भला करने की कोशिश करते हुए माओवादियों ने ट्रेन की पटरियाँ ही उड़ा दी- जिस कारण रात के अंधेरे में 3-4 ट्रेनें खड़ी रह गईं। हमारे मेहनती रेलकर्मियों ने जरा भी तकलीफ नहीं उठाई, व सुबह होने के बाद ही पधारे। नतीजन हमारी ट्रेन 11 घंटे लेट हुई, और हमारे पहुँचने से पहले ही रजिस्ट्रेशन शुरू हो चुका था।

खैर, सफर से थके मंदे हम निकल पड़े युको बैंक की खोज में निकल पड़े। 'युको बैंक ही क्याँ' आप पूछेंगे- तो भईया हमें भी नहीं पता, हमारे पिताजी से ही पूछिए जिन्होंने उस बैंक में हमारा खाता खुलवाया। जात समृद्ध रात जब हम वहाँ पहुँचे तो पता चला कि हम पैसे निकाल ही नहीं सकते-क्याँ भला? चूँकि हमारा खाता किसी और शाखा में था और हमारे पास 'पासबुक' भी ना थी। उसके आगे ना मैनेजर ने हमारे पिछो से सेम का 'पास' रिजिल्ट देखा और ना ही मेरे बैग में पड़ी 'बुक'। खाते में मेरा नाम होने पहचान पत्र पास होने के बावजूद वह लकीर का फकीर अड़ा रहा। ना जाने इतने नियम के पक्के व ईमानदार लोग नेता क्याँ नहीं बनते। खैर, काफी



रोने-पीटने-गिङ्गिङ्गाने के बाद वह सर्वशक्तिमान बैंक मैनेजर हमें हमारे ही रूपए देने को राजी हो गया। डीडी ले कर जब हम विक्रमशीला पहुँचे तो वहाँ लगी लाईन देख हमारा दिल दहल गया। जीवन में पहली बार लोगों को पैसा 'देने' को इतना आत्मरुद्ध देखा। जरा पूछताछ करने पर पता चला कि ये सभी बेचारे सुबह से वही खड़े थे। जिक्रोरिटी वालों के 'लेडीज फर्स्ट' के फंडे के चलते लड़कियाँ तो जल्द ही निपट ली-पर लड़के जस के तस खड़े थे। पहले तो हम पूरी ईमानदारी के साथ लाई न में लगे, पर 1 घंटे बाद भी जब लाईन आगे ना बढ़ी तो हमारा धैर्य जवाब दे गया। गार्ड से आँखें बचा कर खिड़की के रास्ते अंदर आ गए और फिर से एक लाईन में लग गए।

और फिर एक और बार लाईन में लगने, और एक घंटा बीत जाने के बाद हम प्रफुलित हो हॉल लौट आए कि आज हमने 500 रु बचा लिए। बाद में पता चला कि अभी भी 'आनलाईन रेजिस्ट्रेशन' बचा है।

इस विषय में हम अपने फैकल्टी एडवाइसर से बात करने गए तो उन्होंने साफ मना कर दिया कि उन्हें कुछ नहीं मात्रम्। दोर्तों ने बताया कि हमें अपना शर्मनाक ग्रेडकार्ड व डायरी लेकर फैकल्टी एडवाइसर के पास जाना है। सभी की नजरों से छुपा कर जब हमने अपना ग्रेडकार्ड प्रिंट करने का प्रयास किया तो प्रिंटर ने भी हमारे बेकार ग्रेड प्रिंट करने से इन्कार कर दिया, और उसके अलावा कागज पर सब कुछ छाप दिया। लोगों ने बताया कि यह दोष हमारे ग्रेड का नहीं, ई.आर.पी में ही कुछ खराबी है। खराबी जो भी थी, ऑनलाईन रेजिस्ट्रेशन की आखिरी तारीख 4 जनवरी तक तो ठीक नहीं हुई... पर हर बार अलग परेशानी जरूर बताती थी। रेजिस्ट्रेशन कार्ड, डिजिटल सिग्नेचर, ई.आर.पी और डिपार्टमेंट के इस झांमेते से हम जल्द ही फूर्त हो गए और सब कुछ राम भरोसे छोड़ दिया। जहाँ तक मेरा मानना है-हमारा फर्जिस्तानी की रक्षा है, बाकी जय राम जी की।

भाट की लगा दी वाट

अन्युमनाई मीट में जब हमने वर्षी बाद अपने 'बॉम कैलॉरीमीटर' को देखा तो दिल में झानकार बीट्स बज उठे।

कब के बिछुड़े हुए हम

आज कहाँ आ कर मिलें।

सूट बूट पहने हुए अपना लंगोटिया यार ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैसों पर पीताम्बरी लिपटी हो। भूले बिलारे यादों के पिटारे को खोलते हुए हमने अपने चिर परीक्षित कैजिपीयन अंदाज में संवादों का आदान प्रदान प्रारंभ किया। हम उनसे मुख्यातिब हुए, "अरे बी.सी.! तू तो बिल्कुल नहीं बदला, तुम्हारी कमर तो अभी भी कमरे जैसी है।" हम सेर तो वो सावा सेर निकले तुरन्त ही हमारी छरहरी काया को बन्दर का 'रकेलिटन' का दर्जा देते हुए एक शेर सुना दिया-

गोरा दौरा दंग है बन्दे, पर नाक - नक्स बैलैल है।

मुख का फाट साढ़े तीन बीता, लग रहा सिनेमा हॉल है।

मेरे दोस्त को प्लेसमेंट के दर्यानीय हालत पर तरस आ रही थी। उसने प्लेसकाम को लाताड़ते हुए कहा कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को तो केजीपी के नाम



पर मानो साँप सौंप गया है। मैने भी सुर मे सुर मिलाते हुए प्लेसकाम दाचा पांच सौ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बुलाने के दांवों को हवाई किला करार दिया। मगर साहब बिदक उठे कहने लगे प्लेसकाम करे भी तो क्या करे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों भी तो मंदी की मार झेल रहे हैं। मेरा तो माथा ठनक गया, ऐसा लगा मानो इस मंदी रूपी वायरस को फैलाने का ठिकरा मेरे ही सर है। जैसे की बैंकों का सारा कर्ज मैने ही ले रखा हूँ। तभी सर जी ने श्री ईडीयट रूपी महाभोग को थाली में सजा कर हमारे सामने पेश किया। बोले सोचो क्या गुजरी होगी चेतन भगत पर जब उसी की रचना पर आधारित फिल्म से उसका श्रेय छीन लिया।

मैने भी सामनी जतायी कि चेतन के साथ नाइंसाफी हुई है। वो किर से बिफर पड़े। बोले, "वो कौन सा दूध का धुला है उसने भी कहीं न कहीं से कहानी चुराई ही होगी। सबकं सब चौर भरे पड़े हैं हमारे यहाँ।"

मैं समझ गया कि श्रीमान का इचादा बातचीत करने का नहीं बल्कि हर बात में चित्त करने का है। हमारी अकल ठिकाने लग गयी थी कि हमने इन्हे छेड़ है तो ये हमे छोड़ेगे नहीं।

बात संपादक की

नये साल और नये सोमेस्टर में हम आवाज़ की तरफ से आपका एक बार फिर रवागत करते हैं। ॥ खड़गपुर की जनता के लिये सबसे खुशनुमा महीन जनवरी के महीने में ही होता है। सोमेस्टर की शुरूआत होते ही नव-वर्ष का आगमन और पूरे महीने खिंगफेर्ट और शितिज का खुमार इस महीने को विशेष बना देते हैं। इस बार भी कैंपस में वही चिर-परिचित उल्लास देखा जा सकता है। हालांकि आर्थिक मंदी और प्लेसमेंट से जुड़ी आशंकाओं ने पिछली बार की तरह इस बार भी रंग में भंग डाला है।

गुजरा साल ॥ खड़गपुर के लिये कुछ खास अच्छा नहीं कहा जायेगा। कई उथल-पुथल भरी घटनाओं ने आमतौर पर शांत रहने वाले माहीन को हिला कर रख दिया। सुकून की बात ये है की साल का उत्तरार्ध तुलनात्मक रूप से शांत और स्थिर रहा। बस मंदी और आस-पास के इलाकों में माओवादी हिस्सा से कुछ अनिश्चितता की स्थिति रही जिसे की समझा जा सकता है और आशा की जा सकती है की आने वाले दिनों में स्थिति और बेहतर होगी।



आस-पास के क्षेत्रों में माओवादी हिस्सा में अभूतपूर्व बड़ोतारी और ट्रेन रोकने और पटरी उखाइने जैसी घटनाओं ने सबके माथे पर चिंता की लकीरें खींची हैं। हालांकि कैंपस के अंदर सुरक्षा के अच्छे इंतजाम किये गये हैं। पर समाज और देश की बेहतरी के लिये अब आवश्यक लगने लगा है कि इस मामले के स्थायी हल के लिये सरकार ठोस कदम उठाये।

इसके अलावा शिक्षा सुधारों की बात आजकल आये दिन सुनाई दे जाती है। देश में रिसर्च की स्थिति सुधारने पर भी काफी चर्चा हो रही है। उम्मीदों ले कर आता है। आशा की जानी चाहिए कि 2010 में हमारी ॥ और हमारा देश नयी बुलंदियों को छुयेंगे। शुभकामनाओं सहित

संपादक आवाज़

अनेकता में एकता पर आँच

15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली। उस समय कई छोटे प्रांत या तो किसी राजा के शासन में थे (Princely states) या कुछ सीधे बिट्ठि हुक्मत (Provinces) के। कई प्रांतों को मिलाया या तोड़ा गया... और कई अलग मापदंडों पर कुछ राज्य बने जैसे बाह्य, हैदराबाद, मध्य भारत, सौराष्ट्र जिनमें से अधिकतर अभी अस्तित्व में ही नहीं हैं। भारत के संविधान में यह संभव है कि यदि संसद में बहुमत हो तो नया राज्य बनाना या राज्य की सीमा बदलना संभव है। यह "Bill Affecting The Boundaries Of Any State" Article 3 में लिखा हुआ है।

1952 में तेलुगु भाषियों के प्रमुख नेता श्री पोष्टी श्रीरामलु ने अनिश्चितकालिन भूखंड हड्डाल की ताकी मद्रास राज्य से जुड़े तेलुगु भाषियों को एक अपना राज्य मिले। दरअसल महात्मा गांधी खुद चाहते थे कि जितनी भाषायें भारत में हैं, उनमें ही राज्य होने चाहिए पर बैंटवारे के बाद तुरंत इस तरह के राज्य बनाने पर जोर नहीं डाला गया। दुर्भाग्यवश 58 दिनों के भूखंड हड्डाल के बाद श्री पोष्टी श्रीरामलु का देहांत हो गया और जनता हिस्सक हो उठी। तब 1 अक्टूबर को आँध का राज्य बना जो मद्रास के तेलुगु बोले जाने वाले जिलों को एकजुट कर बनाया गया। तेलंगाना प्रांत उस समय हैदराबाद राज्य का हिस्सा था।

आँध राज्य के बनने के बाद इसे तेलंगाना के साथ मिला कर तेलुगु भाषियों का अपना एक राज्य बनाने पर काफी जोर शोर से चर्चा चल रही थी परंतु तेलंगाना के निवासियों को इस बात से देतराज था। तेलंगाना के पास अन्न कि कमी थी जो आँध का राज्य पूरा कर सकता था और तेलंगाना के पास आँध के कोयले की कमी पूर्ण करने का समाधान था। दोनों के एक जुट हो जाने पर कृष्णा और गोदावरी के पानी का भी समुचित ढंग से बिना विवाद के पूरे राज्य के लिए उपयोग किया जा सकता था। लेकिन आँध का राज्य आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ था और तेलंगाना शिक्षा के मामलों में। इस तथ्य को प्रमाणित करता है 'फैजल अति कमिशन'। तेलंगाना के निवासियों को सरकारी क्षेत्र में नौकरी की सुरक्षा और उनके प्रांत के समान विकास का भरोसा चाहिए था। यह शर्त

SF में फाइन आर्ट्स इवेंट्स

नई तथा विविध प्रतियोगिताओं के साथ पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी SF में फाइन आर्ट्स प्रतियोगिताओं का आयोजन SPECTRA के द्वारा किया गया। किसी तकनीकी विश्वविद्यालय में प्रतिभागियों का फाइन आर्ट्स के प्रति ऐसा उन्साह देखना अनपेक्षित है, किंतु इस बार बाहर के प्रतियोगियों के साथ-साथ KGP की जनता ने भी जमकर भागेदारी ली। इस वर्ष कुल 12 प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी थीं जिसमें पारम्परिक रंगोली, स्कैचिंग के साथ-साथ फैशन आउटफिट डिजाइन तथा पेपर बुक मैकिंग जैसी अपारम्परिक प्रतियोगिताओं को भी समिलित थीं। 683 प्रतियोगियों ने विभिन्न फाइन आर्ट्स प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिसमें रूपि डेसिग्न में सबसे ज्यादा प्रविष्टियाँ मिली। NSHM तथा NIT-RKL के प्रतिभागी इस वर्ष विशेष दैयारी के साथ आए थे परंतु फिर भी निर्णयोंका द्वारा ॥ KGP की प्रविष्टियों को ज्यादा सराहना मिली।



"हर बालक एक कलाकार है परंतु समस्या यह है कि जब हम बड़े हो जाते हैं तो कलाकार कैसे बने रहें" पाल्लो पिकासो का ये कथन कला और परिपक्वता के अंतर को प्रदर्शित करता है जो इस SF में देखा गया। बड़ों के साथ-साथ हमारे परिसर के बच्चों ने भी प्रतियोगिताओं में भागीदारी ली जिन्हें SPECTRA की ओर से विशेष प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किए गए।

कुल मिलाकर यह SF रंगों से सरोबार रहा और प्रतिभागियों ने अपनी अग्रिम्यक्षित से रवाया को ही चकित कर दिया। पिछले वर्ष की तरह ही SF ने फाइन आर्ट्स के आयोजन की जिम्मेदारी INHOUSE PARTNER के अंतर्गत दुबारा SPECTRA को दी, जो की कैंपस में फाइन आर्ट्स तथा डिजाइन ग्रूप की तरह कार्यात है। प्रतियोगिताओं के निर्माण से लेकर उनके आयोजन तक SPECTRA द्वारा DESTINATION ARTLAND के अंतर्गत किया गया था। SF की ओर से सभी प्रतियोगियों को पार्टी सीपेशन स्टॉफिकेट और विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। आकर्षित प्रविष्टियों को SPECTRA की

आवाज़ टीम

मुख्य संपादक: विकास कुमार, सुरेंद्र केसरी
संपादक: अविमुक्तेश भारद्वाज, वरुण प्रकाश
सह संपादक: आशुरोष कुमार मिश्रा, आदित्य मणि झा, सोनल श्रीवास्तव, दामिनी गुप्ता, अंकिता मंगल, अमन कुमार, सिद्धार्थ दोशी, सुकेश कुमार

रिपोर्टर: मधुसूदन, स्वाति दास, निष्ठा शर्मा, निधि हरयानी, प्रतिक भारतकर, अनुराग कटियार, सिमान्त उज्जैन, सुप्रिया शारण, कुणाल मिण्डा

जनियर रिपोर्टर: रोहन भटोरे, संगीत चंद्रन, प्रत्यक्ष पाठक, वैभव श्रीवास्तव, अनिमेश चौधरी, सुशील चाठी, अमित कुमार डालमिया, सुगन्धा

त्रिभ: सिद्धार्थ दोशी, सुकेश कुमार, सुप्रिया शारण, कुणाल मिण्डा



नए सोमेस्टर की शुरूआत के साथ ही शुरू हो जाती है भागमभाग। रजिस्ट्रेशन की लंबी लाइन, पिछले सोम के ग्रेड्स का सदमा, Breadth के लिए भागदौड़..... उपक!! इन सबके बीच जो एक खुशी की लहर लाता है वो है नया साल।

नया साल आते ही सबके दिलों में नई उमंग, नए उत्साह, नए जोश, नई आशाएँ और नई ऊर्जा का संचार होता है। प्रत्येक वर्ष की तरह यह नव-वर्ष भी पूरे विश्व में विभिन्न तरीकों से मनाया गया परन्तु हमारे IIT खड़गपुर का अंदाज ही अलग था। सब कुछ सामान्य दिनों जैसा ही दिखता था। मगर लोगों के दिलों में ज्ञानके पर पता चलता कि उन्होंने कितने कठिन कानों का प्रण लिया है नये वर्ष में। नव-वर्ष की पूर्व संध्या पर भी कई लोग रात भर अपने-अपने कमरों में अपने अभिन्न मिश्र 'लैपटॉप' के सामने बैठे रहे। और करें भी क्या, अगले ही दिन सुबह 7:30 की क्लास जाना था। कुछ विलक्षण प्रतिभा के धनी लोग अवश्य अपने विवेक और जेब का उपयोग करते हुए दीखा,

KGP ट्रेण्ड

पुरी आदि का भ्रमण कर आये। परंतु अधिकांश जनता के पास फ़्रूट्स होने के सिवा कोई और चारा नहीं था।

प्रशासन ने कैम्पस में हर जगह 'Happy New Year - 2010' अंकित सफेद पन्जे लगाकर अपनी तरफ से सबके New Year को Happy कर दिया। हमारे छात्र नेताओं को भी जनता का फ़्रूट्स दिखाई नहीं दिया। कुछ हाँलों में अवश्य Bonfire जलाने की प्रथा है जो कि अब कहीं कहुआ और कहीं तकिये जलाकर निभाइ गई।

नव-वर्ष जैसे कुछ चंद अवसर ही तो होते हैं जबकि हम Inter-Hall G.C के कारण विभाजित हो चुकी Kgp जनता को एकजुट करें और अपनी अखण्डता का प्रमाण दें। ज्ञान घोष रस्टेडियम में एकत्र होकर सब मिलाकर नव-वर्ष मनाएँ जिससे पूरे साल लोगों में उत्साह का संचार होता रहे।

इनसे क्या कहें?

3 सितंबर, 2009 को आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री की एक हवाई दुर्घटना में अकाल मृत्यु के कारण वित्त मंत्री कानिजेटी रोसैया को मुख्य मंत्री का पद सौंपा गया। बस इस दुर्घटना के दो महीने बाद ही TRS के सचिव के चंदशेकर राओ ने अपनी बरसों की तमज्जा पूरी करना सहज समझा और कर दिया। अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल। परिणाम वश तेलंगाना क्षेत्र में आये दिन या तो बंद या कोई सामूहिक प्रदर्शन ने शहर को ठप कर रखा। इसी तरह 11 दिन तक चली इस भूख हड़ताल से 10 दिसंबर को तेलंगाना क्षेत्र में तब राहत पहुँची जब पी चिंदंबरम ने तेलंगाना का अलग राज्य बनने पर गौर करने का भरोसा दिया। परंतु मामला यहाँ समाप्त नहीं हुआ। तुरंत ही संयुक्त राष्ट्र की माँग करने वाली पार्टीयों ने इस सहमतता के विरोध में बंद ऐलान किया और आंध्र प्रदेश के कई क्षेत्रों में जीवन फिर असमान्य हो गया। बँटवारे का जुखाम देश के बाकी हिस्सों में भी फैला और देश में कोहरा सा छा गया। जब केंद्रीय मंत्रालय अपने तेलंगाने के बाद से चुकने लगे तो TRS और उसकी विरोधी पार्टीयों ने फिर अपनी मनमानी शुरू कर दी। इसी तरह पूरा दिसंबर आंध्र प्रदेश में बंद रहा और न जाने वहाँ जीवन कब सामान्य होगा।



कर रखा। इसी तरह 11 दिन तक चली इस भूख हड़ताल से 10 दिसंबर को तेलंगाना क्षेत्र में तब राहत पहुँची जब पी चिंदंबरम ने तेलंगाना का अलग राज्य बनने पर गौर करने का भरोसा दिया। परंतु मामला यहाँ समाप्त नहीं हुआ। तुरंत ही संयुक्त राष्ट्र की माँग करने वाली पार्टीयों ने इस सहमतता के विरोध में बंद ऐलान किया और आंध्र प्रदेश के कई क्षेत्रों में जीवन फिर असमान्य हो गया। बँटवारे का जुखाम देश के बाकी हिस्सों में भी फैला और देश में कोहरा सा छा गया। जब केंद्रीय मंत्रालय अपने तेलंगाने के बाद से चुकने लगे तो TRS और उसकी विरोधी पार्टीयों ने फिर अपनी मनमानी शुरू कर दी। इसी तरह पूरा दिसंबर आंध्र प्रदेश में बंद रहा और न जाने वहाँ जीवन कब सामान्य होगा।

एक पहलू ऐसा भी

पिछले दिनों केरल उच्च न्यायालय ने आर्थिक पिछड़पन के आधार पर आरक्षण की राज्य सरकार की नीति को हरी झंडी दे दी। अब वहाँ तथाकथित उँची जातियों के गरीब छात्र भी उच्च शिक्षा में आरक्षण के हकदार होंगे। सरकारी महाविद्यालयों में 10 और प्राइवेट महाविद्यालयों में 8 प्रतिशत सीटें आर्थिक तौर पर पिछड़े विद्यार्थियों के लिये आरक्षित होंगी। कोर्ट ने ये फैसला एक अत्यसंख्यक प्रतिनिधि संस्था की याचिका को खारीज करते हुये दिया। आरक्षण हमेशा से एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। यह उन कुछ मुद्दों में एक है जो राजनीतिक तौर पर हर पार्टी के लिये अछूत रहे हैं। आरक्षण की प्रासंगिकता पर शायद प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता पर उसके तौर-तरीकों पर गंभीर बहस की अब सख्त जरूरत तो है ही। कम से कम समाज पर इसके प्रभाव की समय-समय पर विवेचना होनी चाहिये। इससे इसके वार्तविक हकदारों का पता चलता रहेगा और जो लोग लाभान्वित होते आये हैं उनकी सामाजिक स्थिति में आये परिवर्तन की विवेचना भी हो सकेगी। अब समय आ गया है की समाज जाति और धर्म जैसी चीजों से मानसिक रूप से उपर उठे और इससे संबंधित मुद्दों पर विचार बहस हो। जैसा कि कोर्ट का मानना है “हर तबके की सामाजिक स्थिति में कुछ सुधार तो हुआ ही है और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिये प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता निर्विवाद रूप से है।”

DC
Top
5

1. The hurt locker <movie>
2. Zeitgeist 2 <documentary>
3. The office season 3 <tv series>
4. Up in the air <movie>
5. A serious man<movie>



महासागर दशकों से DDT निर्गमन करते आए हैं

भले ही विवादास्पद कीटनाशक DDT को विश्व रूपर पर प्रतिबंधित कर दिया गया है किंतु वैज्ञानिकों द्वारा किये गये एक कम्प्युटर सिमुलेशन से यह निष्कर्ष निकला है कि अभी भी महासागरों से इस हानिकारक कीटनाशक का पुनरोत्सर्जन (Re-emission) जारी है। 1940 से 1970 के बीच लगभग 1.5 मिलीयन टन डी.डी.टी का इस्तेमाल कीटनाशक की तरह किया गया था किंतु इसके हानिकारक होने की वजह से इसे इस्तेमाल करने पर पाबंदी लगा दी गई। DDT जलीय जीवन की विस्तृत श्रंखला को विषाक्त करता है तथा कई पक्षियों की प्रजातियों को भी प्रभावित करता है।

इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने 1950 से 2002 के बीच महासागरों एवं वायुमंडल के बीच हुए DDT सर्कुलेशन का मॉडल तैयार किया। हाँलाकि

आजकल DDT का प्रयोग मुख्यतः दक्षिणी गोलार्द्ध तक सीमित है किंतु इस विवादास्पद कीटनाशक की सांदर्भ (Concentration) मुख्यतः उत्तरी गोलार्द्ध में बढ़ रही है और वायुमंडल एवं महासागर इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस अध्ययन से यह बात सामने आयी है कि 1970 के दशक में लगाये गये प्रतिबंधों के बाद महासागरों से DDT का पुनरोत्सर्जन वर्तमान में DDT प्रदूषण का सबसे बड़ा स्रोत है। किंतु वैज्ञानिकों का मानना है कि मनुष्य प्रजाति पर इसका सीधा असर नहीं पड़ेगा किंतु उत्तरी क्षेत्रों में रहने वाले समुद्री जानवर इससे प्रभावित होंगे। यह परिवर्तन (Ecosystem) के लिए चिंता की बात है क्योंकि कई समुद्री जीव DDT के घन्टव (Density) को कई गुणा बढ़ा देते हैं जो भोजन श्रंखला में ऊपर जाकर मछलियों एवं अन्य जीवों पर विषाक्त प्रभाव डालता है।

Enjoy the specific taste of Indian, South Indian, Chinese, Tandoor dishes at the food café

Break n' Bite

a food eat

For door step delivery:-

Call 9932486646

Tejvinder Singh Dhami (Rinku)
At – Hotel Park Arcade
Near – IIT Kharagpur

आई आई टी में फैकल्टी कोटा

शुरूआती प्रतिरोधों के बाद अब भारत के उच्च तकनीकी संस्थानों “आई आई टी” ने भी अपने फैकल्टी के चयन में आरक्षण देना शुरू कर दिया है। आई आई टी खड़गपुर द्वारा नवम्बर 2009 में फैकल्टी चयन के लिए जारी किये गए विज्ञापनों में एस सी, एस टी एवं ओ बी सी उम्मीदवारों के लिए क्रमांक 15, 7.5 एवं 27 प्रतिशता आरक्षण की व्यवस्था की गयी है। यह आरक्षण साइंस एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सिर्फ एसीस्टेन्ट प्रोफेसर के पद पर दी जाएगी। जबकि प्रबन्धन एवं हायूमेनिटी के क्षेत्र में प्रोफेसर के पदों के लिए भी आरक्षण होगी।

हालांकि आई आई टी प्रशासन एवं सरकार का कहना है कि यह आरक्षण सिर्फ चयन के समय ही दिया जाएगा एवं योग्यता अनुभव तथा काविलियत के साथ कोई समझौता नहीं किया जायेगा। मानव संसाधन मंत्रालय में यह भी कहा है कि अगर सारे प्रयासों के बाद भी सीटे नहीं भरी जा सकेंगी तो इन्हें सामान्य उम्मीदवारों से भरा जायेगा। लेकिन विशेषज्ञों की चिंता यह है कि जब आरक्षण का कोई प्रवाधान नहीं या तो भी योग्य उम्मीदवारों के अभाव में सारी सीटें नहीं भरी जा सकी थीं तो अब कोटे की सीटों को भरना कैसे संभव होगा।

जैसे आशंका यह भी जताई जा रही है कि कई सरकार प्रोफेसर की

कमी को पूरा करने के लिए इन उम्मीदवारों को दियायत देने के लिए तो बाध्य नहीं करेगी। जैसे शिक्षक महकमे को इस बात का भी डर है कि नियुक्ति के समय दी जा रही इस आरक्षण को बाद में प्रोफेसर के लिए भी लागू किया जा सकता है। जैसे ताज्जुब की यह भी है कि हमारे प्रोफेसर यह तो स्वीकार करते हैं कि शिक्षक पदों पर आरक्षण लागू करने से शिक्षा के स्तर में निश्चित तौर पर गिरावट आयेगी लेकिन वही प्रोफेसर जो कि वेतनवृद्धी के लिए हडताल पर चले गए थे इस आरक्षण के खिलाफ सार्वजनिक रूप से कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हैं।

आई आई टी खड़गपुर के एक प्रोफेसर ने अपनी निजी राय व्यक्त करते हुए कहा कि जैसा कि पूर्व में होता आया है आरक्षण लागू करने के लिए शिक्षकों की काविलियत के साथ समझौता तो करना ही पड़ेगा। उन्होंने यह भी स्वीकार कि आरक्षण लागू करने से पढ़ाई के स्तर में निश्चित रूप से गिरावट आयेगी।

अब जबकि आई आई टी बॉम्बे में शिक्षक नियुक्ति में आरक्षण को हरी झण्डी दे दी है जबकि आई आई टी गुवाहाटी इसे 2008 में ही लागू कर चुका है। दूसरे आई आई टी भी शीघ्र इसी राय पर कदम बढ़ाने वाले हैं। ऐसे में सावल यह उठता है कि क्या यह छात्रों के भविष्य के साथ खिलाड़ नहीं हो।

मेगालिथ

विभिन्न विभागों के फैस्ट होने की शृंखला में अब एक नया नाम जुड़ गया है। सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा 15-17 जनवरी के दौरान ‘मेगालिथ’ का आयोजन किया गया जो कि पहली बार हुआ। फैस्ट में जो इवेन्ट्स हुए उनमें इंस्ट्रियल डिज़ाइन प्रॉब्लम, कैला रटडी, सिलियोनिक्स नामक रोबॉट मॉडलिंग प्रतियोगिता एवं क्लायर नामक ब्रिज मॉडलिंग प्रतियोगिता प्रमुख रहे। इसके अतिरिक्त विचङ्ग व सेमिनार का आयोजन भी हुआ। दो सेमिनार



आयोजित हुई जिनमें से पहली ‘टेक्ससा’ नामक कंपनी द्वारा ‘वॉटरप्लॉफिंग ऑफ सीलिंग’ पर एवं दूसरी ‘एवरसेन्टर्ड’ द्वारा ‘स्टील स्ट्रॉकचर ऑन हाई राइज बिल्डिंग’ विषय पर थीं। साथ ही प्रोग्रामिंग व डिज़ाइनिंग में रुचि रखने वालों के लिए डारकोड व को-आर्डिनेट्स नामक प्रतियोगिताएँ प्रमुख रहीं। विभिन्न कॉलेजों से लगभग 150 प्रतियोगियों ने फैस्ट में भाग लिया जिनमें नई आईआईटी पटना व भुवनेश्वर से अधिकांश शामिल हुए। प्रथम बार हो रहे इस फैस्ट को सफलतापूर्वक आयोजित करवाने में विभाग के प्रो. ध्रुबज्योति सेन व प्रो. निर्जन धांग का महत्वपूर्ण योगदान रहा। फैस्ट का बजट लगभग 2.5 लाख रुपए रहा। कुल मिलाकर यह फैस्ट सफलतापूर्वक संपन्न हुआ व सिविल इंजीनियरिंग विभाग के लिए नया प्रयास रहा।

राष्ट्रीय E-Summit (15-17 जनवरी)

15-17 जनवरी तक आईआईटी खड़गपुर में ‘ई सेल’ के द्वारा राष्ट्रीय E-Summit (वैश्विक उद्यमिता सम्मेलन) का आयोजन किया गया। मंत्री के इस दौर में जहाँ नौकरी पाना एक खाब सा हो गया है, उस समय इस सम्मेलन का आयोजन निश्चय ही प्रासंगिक है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में उद्यमिता के महत्व पर प्रकाश डाला गया। छात्रों के मुताबिक समारोह काफी ज्ञानवर्धक था एवं उन्हें इससे व्यापार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में हाथ आज़माने की प्रेरणा मिली।

श्री रिचार्ड केम्प (सह निदेशक ओपेन यूनिवर्सिटी), श्री जे. रीयो (सी.ई.ओ. वायुग्रीड मार्केट प्लॉस सर्विसेज लिमिटेड), पद्मश्री अनिल गुप्ता (उपाध्यक्ष नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन) जैसे व्यापार जगत के प्रख्यात व्यक्तिगतों ने अपनी उपस्थिति एवं व्याख्यानों से इस सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। इस सम्मेलन में विशेष के कई देशों ने हिस्सा लिया जिनमें अमेरिका, इंग्लैंड, आयरलैंड, जापान और चीन के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस सम्मेलन में ‘कलीनटेक चैलेंज’ के फाइनल राउंड के साथ साथ



गणित संगोष्ठी

इस बार 15 से 17 जनवरी के बीच गणित विभाग ने पहली बार Regional Symposium on Mathematics (RSM) का आयोजन किया। इसका उद्देश्य विभिन्न कॉलेजों

के विद्यार्थियों एवं प्रध्यापकों को आपस में इंटरैक्शन हेतु एक मंच प्रदान करना था। इसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे Mathlete, Cryptic, Algorithmic एवं पेपर प्रजेन्टेशन का आयोजन किया गया। इसके अलावा डॉ रीमा नंदा (TIFR बंगलौर, An Introduction to Mathematical Modeling for Biology), डॉ दीपांकर बनर्जी (IIAP बंगलौर, Lecture of Magneto-Hydrodynamics) तथा डॉ एम कैथ घोष (IISc बंगलौर, An Introduction to Game Theory) के व्याख्यान काफी उल्लेखनीय रहे। इसके साथ ही SAS (Statistical Analysis Software) सॉफ्टवेयर पर एक वर्कशॉप का भी आयोजन किया गया। कुल मिलाजुलाकर डिपार्टमेंट फैस्ट

की शृंखला में गणित विभाग का यह प्रयास काफी सफल रहा तथा आयोजकों ने इसे प्रतिवर्ष कराने का निश्चय किया है।



Kamal Sports

Deals in all type of sports goods
and fitness equipment

16-A, Gole Bazar, Kharagpur

Contact:- 9933521191

2009 की झलकियाँ

हर वर्ष अपने साथ कुछ ऐसे पल लाता है जो कभी हमारे चेहरे पर मुरुकान लाती है तो कभी आँखों में आँसू। वर्ष 2009 के कुछ ऐसे पलों पर एक नजर।

जनवरी : वर्ष की शुरुआत स्प्रिंगफेस्ट (पचासवाँ संस्करण) और क्षितिज के साथ रग्नीन रही। ब्रिटिश काउन्सिल, फेमिना, Led Zepplica, KK SF की शान रहे तो वर्षीय ACM (overnite), ASHRAE (Kryotech), AIAA (Laws of Motion) और ASME (student design competition) के अलावा 'मेगा सेन्ट्रल' में इंजिनियरों और अकिटेक्टरों के सामने खड़गपुर रेलवे स्टेशन को नये सिरे से डिजाइन करने की चुनौती रखी गई।



फरवरी : हर साल की तरह इस साल भी वेलेंटाइंग न्स के आया और चला गया पर किसी के स्टेटस में हमेशा की तरह कोई बदलाव नजर आने से रहा पर खैर इस माह में जेनेसिस 2009 एवं Bitwise का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। मिड सेमेस्टर की परीक्षा का वक्त लोगों के लिए शायद अवांछनिय रही।

मार्च : भगवान कर्ते कि ऐसा मार्च किर कभी ना आये। ईश्वर रोहित की आत्मा को शाँति दे। इस महीने ने बहुत उथल-पुथल देखी और हेट सारी मीटिंग्स हुई-BOG, TOAT और सुपर फाइनल ईयर छात्र, सभी ने गंभीर मसलों पर चर्चा की। आई.आई.टी. के SMST के प्रोफेसर सुजय गुहा और उनकी टीम ने एक लाख में खरीदा जा सकने वाला कृत्रिम हृदय तैयार किया है जो कि हृदय संबंधी समस्याओं से ग्रसित लोगों को हृदय चोपाई द्वारा नया जीवन प्रदान करने की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम है। इस हृदय की जाँच जानवरों पर शुरू की जा रही थी।

अप्रैल : हर वर्ष की तरह कुछ Kgpians अपनी मंजिल खोजने IIT का दामन छोड़ आगे बढ़ चले तो कुछ मरम्मी करने इंटर्न चले गये।

जूलाई : अपने 58 वर्ष के इतिहास में जैईई ने पहली बार बची हुई सीटों को दूसरी Counselling से पूर्ति की। मानव संसाधन मंत्रालय ने ये निर्णय हर वर्ष IIT में कुछ सीटें बच जाने की वजह से लिया। और इस वर्ष पहली बार Orientation सिनियर्स से पेहले डायरो ने लिया..... फत्त्वों ने सोचा के डायरो के Orientation के बाद कुछ भी झेला जा सकता है।

अगस्त : Professor's strike-IIT के प्रोफेसरों की मांग को लेकर सरकार के असंवेदनशील रवैये से मजबूत होकर प्रोफेसरों को विरोध-प्रदर्शन में सामूहिक अवकाश पर जाना पड़ा। सरकार ने मेहता समिति का गठन तो अवश्य किया परंतु उसके प्रस्तावों को उसके मौतिक रूप में ना स्वीकार कर अपने ही मनमाने

द्वंग से लागू किया।

सितंबर : हिन्दी दिवस समारोह

प्रत्येक वर्ष की भाँति 2009 में भी 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया गया। 7 से 14 सितंबर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन हुआ और 11 सितंबर को हिन्दी दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत IIT कानपुर के प्रोफेसर एवं सुप्रसिद्ध पुस्तक concept of physics के लेखक H.C.Verma ने "नाभिक के स्थायित्व और ब्रह्मांड" पर व्याख्यान दिया। इस सप्ताह में IIT का पहला सफल Inhouse कवि सम्मेलन हुआ।



मार्टिन ग्रेगोरी के संस्कार, बिहार

अक्टूबर : प्रशासन ने कैम्पस में सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाये। कई प्रमुख स्थानों पर CCTV कैमरे लगाये गये और साथ ही संस्थान में सुरक्षा को सुदृढ़ करने हेतु स्निफर डॉग्स लाए गये।

इल्लू : एक वर्ष के अंतराल के बाद दिवाली की रौशनी खड़गपुर वापस आयी। 17 अक्टूबर को हुए इल्लू में RK हॉल के समुद्र मंथन को और रंगोली में RP को रस्व पदक से पुरस्कृत किया गया।

नवम्बर : नवम्बर में मानो कम्पनियों की एक बहार सी आयी। टाटा, DB, Microsoft, Yahoo, HUL, GE, Finance, IOCL, Deloitte, आदि का नाम देख सभी को कुछ पल के लिए राहत की साँस मिली।



परिसर में दुर्घटनाओं का दौरा:

घटिए दुर्घटनाओं पर नजर डालें तो पहली मौत 22 मार्च के दिन रोहित कुमार की हुई जो LLR छात्रावास के निवासी व विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के 2006 बैच के छात्र थे। उनकी मौत रिक्षा से गिरने के बाद B.C.Roy

अस्पताल में उचित चिकित्सा सुविधाओं के ना होने के कारण हुई। उन्हीं के बैच के एक और छात्र संदेश कुमार की मौत Internship के दौरान समुद्र में डूबने से हुई। 23 अप्रैल को नेहरू छात्रावास में पांचवें वर्ष के कोमिकल इंजिनियरिंग के छात्र ने अकादमिक दबाव में आत्महत्या कर ली। जून माह में MMM छात्रावास के छात्र मनोज कुमार ने फॉसी लगा ली। एक कठर दूटा ही था के दाखिला लिये प्रथम वर्ष छात्र योगेंद्र कुमार ने आत्महत्या कर ली। सितंबर में सुदीर्घ भट्टाचार्य ने कोलकाता में आत्महत्या की और उनका शव हुगली नदी में पाया गया। एक कर्मचारी अपने जीवन से स्वयं बेरुख हो परलोक सवार गये।

Technology कार्टून कोना



झूँ। अब तो हॉल में गिजर लगाने वाले हैं। अब न नहाने के लिए तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं होना चाहिए।



भगीरथ! तू लोड न ले। क्योंकि हॉल के नए ब्लॉक में पानी तो आता नहीं तो गरम क्या खाक होगा।

फैकल्टी को रिखाने के लिए आई आई टी अपनायेंगे नए तरीके :

लगातार बढ़ती हुई छात्रों की संख्या को मद्देनजर रखते हुए आईआईटी खड़गपुर समेत सभी आईआईटी संस्थान शिक्षकों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। इस दिशा में आईआईटी शिक्षकों को कई प्रकार के इन्सेटिव देने का भी प्रस्ताव कर रही है जिसमें विदेश यात्रा एवं अन्य बातें शामिल हैं। ज्ञात हो कि आईआईटी पिछले कुछ समय से फैकल्टी कमी की समस्या से जूझ रही है।

सीएबी के रैपेशल पैनल में आईआईटी प्रोफेसर नियुक्त :

25 दिसंबर को भारत और श्रीलंका के बीच हुए क्रिकेट मैच में फल्ललाईट में गड़बड़ी होने के कारण कुछ बाधा आई थी। इसकी जाँच के लिए क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल ने रैपेशल पैनल बनाया है जिसमें उन्होंने आईआईटी खड़गपुर के इलेक्ट्रिकल विभाग के प्रोफेसर गौतम पोद्दार को शामिल किया है।



आईआईटी के प्लॉसमेंट की रफतार बढ़ी :

इस साल आईआईटी के प्लॉसमेंट को देखकर अब विश्वास होने लगा है कि मंदी का दौर अब छंटने लगा है। आँकड़े बताते हैं कि इस साल सभी आईआईटी संस्थानों में लगभग 50-70 प्रतिशत प्लॉसमेंट हो चुके हैं और हमारे काँलेज ने भी उमदा प्रदर्शन किया है। पिछले वर्ष इस वक्त मात्र 35 प्रतिशत प्लॉसमेंट हुई थी। अगर हालात ऐसे रहे तो निश्चित ही हम 100 % प्लॉसमेंट का लक्ष्य छू लेंगे।

बहु हुए कोचिंग सेंस्थानों के लिए दरवाज़े:

इस साल आईआईटी खड़गपुर के अलावा अन्य आईआईटी संस्थानों ने भी फैसला लिया है कि इस साल से कोचिंग संस्थान कैम्पस प्लॉसमेंट के द्वारा छात्रों को नहीं ले जा सकेंगे। आई.आई.टी. का कहना है कि वे न तो छात्रों को कोचिंग लेने को प्रोत्साहित करते हैं और न वे चाहते हैं कि छात्र इस फील्ड में काम करें। उनका कहना है कि छात्रों को इंजीनियरिंग के कार्यक्षेत्र में ही जाना चाहिए।

जी.वाई.डब्ल्यू.एस शुरू करेगी पेपरकाप्ट प्रोजेक्ट :

गोपाली यूथ वेलफेर सोसाइटी ने 'पेपरकाप्ट' नामक प्रोजेक्ट शुरू किया है जिसमें आईआईटी खड़गपुर के सभी हॉस्टलों से फालतू न्यूजपेपर जमा करके गोपाली की कुछ गरीब महिलाओं को दिया जाएगा जिससे वे पेपरबैग बनाएंगी जो टेक मार्केट में बेचें जाएंगे। इस काम के द्वारा उन गरीब औरतों को स्वरोजगार का अच्छा अवसर मिलेगा।



रॉक क्लाइंबिंग वर्कशॉप :

टेक्नोलॉजी एडवेनचर सोसाइटी (टेस) टाटा स्टील एडवेनचर सोसाइटी के साथ मिलकर 28 एवं 29 जनवरी को 2 दिनों का रॉक क्लाइंबिंग कोर्स शुरू करने जा रही है। सोसाइटी के मुताबिक प्रतिभागियों को जमशीदपुर ले जाया जाएगा। इसके लिए प्रत्येक प्रतिभागी से 1500 रुपये शुल्क के तौर पर लिया जायेगा।



अब नाले प्रदान करेंगे ऊर्जा :

आईआईटी खड़गपुर के पाँच छात्रों ने एक ऐसा बायो सेल विकसित किया है जिसके प्रयोग से बिजली तथा पानी की घरेलू समस्या को दूर करना जा सकता है। इस प्रोजेक्ट के कन्सोल के अंतर्गत एक बायो सेल विकसित किया जाएगा जिसमें नाले का पानी जाएगा फिर सेल के अंदर बैक्टेरिया पैदा होंगे जो इस पानी को साफ करेंगे और प्री इलेक्ट्रॉन भी निकालेंगे जिससे बिजली पैदा की जा सकती है। इस प्रोजेक्ट में मनोज मंडेलिया, प्रतीक जैन, शोभित सिंहल, पुष्कित आनंद, मोहन यामा तथा बायोटेक विभाग के प्रोफेसर देबाद्रता दास शामिल थे।



COMPUTER CITY
ONE STEP SOLUTION FOR YR PC
IIT ROAD, PURIGATE, KHARAGPUR.
9434369789 / 9832278786
MAIL :- computercity_kgp@yahoo.co.in

Authorized dealer.

**COMPAQ , HP , DELL , HCL
ACER , SONY , ASUS , TOSHIBA.**

WE PROVIDE QUALITY PRODUCT & QUALITY SERVICE AT BEST PRICE

CQ 40 601 TU	D C2 GHZ	3 DDR2	3 20 GB	DVD	INT 4500 M	14.1"	DOS
610 (452)UFD	C 2 D 2.0 GHZ	3 DDR2	3 20 GB	DVD	INT 4500 M	15.6	DOS
CQ 40 604 TX	C 2 D 2.2 GHZ	4 DDR2	3 20 GB	DVD	NV 512 MB	14.1"	Win 7
CQ 40 616 TU	C 2 D 2.2 GHZ	4 DDR2	3 20 GB	DVD	INT 4500 M	14.1"	DOS

HPDV6-2005AX	AMD Turion 2.2GHz	4 DDR2	320 GB	DVD RW	ATI 1 GB	15.6	Win 7
HP DV4-1506TX	CORE 2 DUO 2.2 GHZ	4 DDR2	320 GB	DVD RW	NV 512 MB	14.1	Win 7
HP DV3-2213TX	CORE 2 DUO 2.2GHZ	4 GB DDR2	320 GB	DVD RW	NV 512 MB	13.3	W7HP
HP DV6-1319TX	CORE 2 DUO 2.2 GHZ	4 GB DDR3	500 GB	DVD RW	ATI 1 GB	15.6	W7HP
HP DV6-1337TX	CORE 2 DUO 2.2 GHZ	4 GB DDR2	500 GB	DVD RW	ATI 1 GB	15.6	W7HP

HP PAVILION

S560601 INSPI 14	DC T4300	2	DVD RW	250 GB	14" LED	CAM+CR+BT+DOS	1 YR ACC DAMAGE
S560603 INSPI 15	C2D T6600	3	DVD RW	320 GB	15.6" W LED	CAM+CR+BT+DOS	1 YR ACC DAMAGE
S560557 INSPI 15	C2D T6600	3	DVD RW	320 GB	15.6" W LED	CAM+CR+BT+DOS	256MB ATI M R
S560604 INSPI 15	C2D T6600	3	DVD RW	320 GB	15.6" W LED	CAM+CR+BT+W IN7HB+	ANTIVIRUS
S560655 INSPI 14Z	C2DSU7300	3	DDR3 DVD	320 GB		CR+BT+VHP+512MB ATI M R	ANTIVIRUS
S560528 STUDIO 14	C2D T6600	4	DDR3 DVD	320 GB	14" LED	CAM+CR+BT+VHP	ANTIVIRUS
S560680 STUDIO 15	C2D T6600	4	DVD RW	500 GB	15.6" WXGA	CAM+CR+BT+W IN7+	512MB ATI M R+
S560511 STUDIO XPS 13	C2D P8600	4	DDR3 DVD	320 GB	13.3" WXGA	CFLCAM+CR+BT+VHP+	NVIDIA 9400M WIN 7

HCL ME LAPTOP

P3857	T4300	2	DVD SM	320	15.4'	BT + CR + CAM + DOS
P3858	T4300	4	DVD SM	320	15.4"	BT + CR + CAM + DOS
B3848	T6500	4	DVD SM	320	15.4'	BT + CR + CAM + DOS
U3924	T6400	4	DVD SM	500	14"	BT + CR + CAM + Linux
B3863	T6600	4	DVD SM	320	15.4'	BT + CR + CAM + DOS

**Before finalizing your purchase
please visit us for best price**